वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष:5 अंक: 312 | बुधवार 15 अप्रैल 2026 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

बाबा साहेब भारतीय संस्कृति में रचे-बसे मूल्यों से जुड़े महामना थे: राज्यपाल

बागड़े ने कहा, डॉ. अम्बेडकर ने देश को सामाजिक समरसता का मंत्र ही नहीं बल्कि राष्ट्र सर्वोच्च है, यह दृष्टि भी दी

जयपुर. शाबाश इंडिया

राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने कहा कि बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर व्यक्ति नहीं अपने आप में संस्था थे। उन्होंने देश को सामाजिक समरसता का मंत्र ही नहीं दिया बल्कि राष्ट्र सर्वोच्च है, यह दृष्टि भी दी। वह संविधान और भारतीय संस्कृति में रचे-बसे मूल्यों से जुड़े महामना थे। उन्होंने कहा कि महामना वह होता है जो मनुष्य जैसा ही होते हुए भी अपने विचारों से और कर्म से जीते जी महानतम विचारों का आलोक देता है। राज्यपाल बागड़े डॉ. अम्बेडकर की 135वीं जयंती पर आयोजित समारोह में संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि अपने अध्ययन का बहुत सारा समय डॉ. अम्बेडकर ने देश-दुनिया के कानूनों को जानने और समझने में ही व्यतीत किया था। इसी से विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत का महान संविधान हमें तैयार कर उन्होंने दिया। बागड़े ने कहा कि बाबा साहेब ने अपना पूरा जीवन वंचित वर्ग के कल्याण को समर्पित किया था। बॉम्बे विधानसभा में वर्ष 1938 में उन्होंने कहा था, "मैं चाहता हूं कि समस्त लोग पहले भारतीय हों, और अंततः भारतीय हों तथा भारतीय के सिवाय और कुछ भी नहीं हों।"

बाबा साहेब अम्बेडकर को श्रद्धा-सुमन अर्पित किए

राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर की जयंती पर मंगलवार को अम्बेडकर सर्किल पहुंचकर उनकी प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर उन्हें नमन किया। राज्यपाल बागड़े ने इस दौरान बाबा साहेब द्वारा वंचित वर्ग के कल्याण के लिए किए कार्यों, संविधान निर्माण और सामाजिक समरसता के अतुलनीय योगदान को याद किया। उन्होंने सभी से बाबा साहेब के आदर्शों के अनुसरण का आह्वान किया।

डॉ. अम्बेडकर ने शिक्षित बनो, संगठित रहो, संघर्ष करो का नारा दिया

राज्यपाल ने कहा कि बाबा साहेब ने राष्ट्र प्रथम की सोच हमें दी और कहा था कि राष्ट्र के हितों को सदा अग्रणी रखें। डॉ. अम्बेडकर के विचार वास्तविक रूप में उस राष्ट्रवाद से ही जुड़े हैं जिनमें व्यक्ति और व्यक्तियों के बीच जातियों, वर्णों, वर्गों, धर्मों में किसी तरह का कोई भेद नहीं है। उन्होंने शिक्षा और जागरूकता के लिए सदा काम किया। डॉ. अम्बेडकर ने शिक्षित बनो, संगठित रहो, संघर्ष करो का नारा दिया। बागड़े ने बाबा साहेब अम्बेडकर के विचारों को अपनाने का आह्वान करते हुए कहा कि वह युगपुरुष थे। उन्होंने डॉ. अम्बेडकर द्वारा देश में रोजगार केंद्रों की स्थापना, दामोदर घाटी परियोजना, हीराकुंड परियोजना तथा सोन परियोजना आदि की स्थापना में रही महत्वपूर्ण भूमिका को स्मरण करते हुए उनकी उदात्त दृष्टि से सीख लेने का आह्वान किया।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने डॉ. भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की

जयपुर. कासं

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने मंगलवार को जयपुर में संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अंबेडकर की 135वीं जयंती के मौके पर अंबेडकर सर्किल स्थित बाबा साहेब की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की। मुख्यमंत्री ने बाबा साहेब को सामाजिक न्याय, भेदभाव उन्मूलन और वंचितों, महिलाओं सहित समाज के सभी वर्गों के लिए बराबरी के अधिकारों का अग्रदूत बताते हुए उन्हें श्रद्धापूर्वक नमन किया। इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री डॉ. प्रेमचंद बैरवा, शिक्षा मंत्री मदन दिलावर, विधि एवं न्याय मंत्री जोगाराम पटेल, मुख्य सचेतक जोगेश्वर गर्ग, सांसद मंजू शर्मा, विधायक गोपाल शर्मा, बालमुकुंदाचार्य सहित अन्य जनप्रतिनिधि एवं बड़ी संख्या में आमजन उपस्थित रहे। इससे पहले मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने मुख्यमंत्री निवास पर भी बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें नमन किया।

विश्व होम्योपैथिक दिवस: दिल्ली के विज्ञान भवन में स्वास्थ्य कल्याण होम्योपैथिक कॉलेज का गौरवशाली प्रदर्शन

नई दिल्ली/जयपुर. शाबाश इंडिया

होम्योपैथी के जनक डॉ. सैमुअल हैनिमैन की 271वीं जयंती के अवसर पर भारत सरकार के आयुष मंत्रालय, सीसीआरएच और एनआईएच द्वारा नई दिल्ली के विज्ञान भवन में दो दिवसीय भव्य समारोह आयोजित किया गया। इस विशेष कार्यक्रम में जयपुर स्थित स्वास्थ्य कल्याण होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज के 35 सदस्यीय दल ने सक्रिय भागीदारी निभाकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। समारोह का औपचारिक उद्घाटन आयुष मंत्री (भारत सरकार) प्रताप राव जाधव, सीसीआरएच के महानिदेशक डॉ. सुभाष कौशिक और एनसीएच के अध्यक्ष डॉ. तारकेश्वर जैन सहित अन्य वरिष्ठ पदाधिकारियों द्वारा किया गया। कार्यक्रम में देशभर के होम्योपैथी विशेषज्ञों ने चिकित्सा के इस क्षेत्र में हो रहे आधुनिक बदलावों पर गहन चर्चा की।

डॉ. योगेश्वरी गुप्ता का व्याख्यान और सम्मान

महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. योगेश्वरी गुप्ता ने कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में शिरकत की। उन्होंने 'अंडरस्टैंडिंग होम्योपैथी' (होम्योपैथी को समझना) विषय पर एक विस्तृत और सारगर्भित व्याख्यान दिया। उनके

शोधपरक और प्रभावशाली विचारों की सराहना करते हुए मंत्रालय के पदाधिकारियों ने उन्हें सम्मानित व पुरस्कृत किया। संस्थान के निदेशक डॉ. पंकज शर्मा के मार्गदर्शन में गए इस दल में संकाय सदस्य, पीजी स्कॉलर्स, प्रशिक्षु चिकित्सक और विद्यार्थी शामिल रहे।

युवा शक्ति को नशे के जाल से बचाना सामूहिक जिम्मेदारी, सनराइज कॉलेज में गूंजी शपथ

उदयपुर. शाबाश इंडिया

भारत सरकार के ''नशा मुक्त भारत अभियान'' के अंतर्गत आरोग्य सेवा संस्थान द्वारा संचालित आरोग्य जिला नशा मुक्ति केंद्र के तत्वावधान में सनराइज कॉलेज ऑफ फार्मेसी में जागरूकता एवं शपथ ग्रहण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का संचालन विजयपाल सिंह सिसोदिया ने करते हुए अभियान के उद्देश्यों पर विस्तार से प्रकाश डाला। सिसोदिया ने कहा कि आज की युवा पीढ़ी तेजी से नशे की चपेट में आ रही है, जिससे उनका उज्ज्वल भविष्य खतरे में पड़ रहा है। उन्होंने इसे केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामाजिक और राष्ट्रीय चिंता का विषय बताया। प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर जोगेंद्र सिंह चौहान ने नशे के शारीरिक, मानसिक और आर्थिक दुष्प्रभावों की जानकारी देते हुए कहा कि यह समस्या परिवारों को भी प्रभावित कर रही है। आउटरीच वर्कर सागर बिलोची और सुदर्शन सिंह ने अपने अनुभव साझा करते हुए बताया कि नशे के कारण अपराध और स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं में लगातार वृद्धि हो रही है। संस्था प्रधान आर. एस. भदौरिया ने युवाओं में बढ़ती नशे की प्रवृत्ति पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि देश के भविष्य को सुरक्षित रखने के लिए सामूहिक प्रयास जरूरी हैं। कार्यक्रम के अंत में विद्यार्थियों, शिक्षकों और स्टाफ ने नशा मुक्त रहने तथा समाज को जागरूक करने की सामूहिक शपथ ली। इस अवसर पर नारायण सिंह राणावत, रीना धोबी, हर्षवर्धन सिंह और श्वेता कुंवर सहित अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे।

रिपोर्ट/ फोटो राकेश शर्मा 'राजदीप'

75 वर्षों की विरासत, आधुनिकता का नया अध्याय: उदयपुर में 'खूबचंद एण्ड सन्स मार्ट' का शानदार आगाज

परंपरा की मजबूत नींव पर खड़ा प्रीमियम शॉपिंग डेस्टिनेशन, ग्राहकों को देगा ऑल-इन-वन अनुभव

उदयपुर. शाबाश इंडिया

शहर की व्यापारिक पहचान में शामिल 'खूबचंद एण्ड सन्स मार्ट' ने अपने 75 वर्षों के गौरवशाली सफर को एक नई ऊंचाई देते हुए आधुनिक प्रीमियम स्टोर के रूप में भव्य शुरूआत की। आर.के. सर्किल, सोभागपुरा लिंक रोड पर सजे इस आकर्षक शोरूम का उद्घाटन निवृत्ति कुमारी मेवाड़ ने फीता काटकर एवं दीप प्रज्वलन के साथ किया। इस अवसर ने परंपरा और आधुनिकता के सुंदर संगम को साकार रूप दिया। उद्घाटन के दौरान उन्होंने स्टोर की साज-सज्जा, सुव्यवस्थित डिस्प्ले और उत्पादों की विविधता की सराहना की। साथ ही, स्मृति स्वरूप खरीदारी कर अपने स्नेह और शुभकामनाएं भी व्यक्त कीं। यह नया मार्ट शहरवासियों के लिए एक ऐसा केंद्र बनकर उभरेगा, जहां गुणवत्ता, सुविधा और आधुनिकता का संगम एक ही छत के नीचे मिलेगा। संस्थान के पार्टनर सांची सिधवानी, कांची वधवा और मेहुल मित्तल ने बताया कि स्टोर को वर्तमान जीवनशैली और ग्राहकों की बदलती जरूरतों के अनुरूप डिजाइन किया गया है। यहां फाइन क्रॉकरी, स्टाइलिश ग्लासवेयर, अत्याधुनिक किचनवेयर, प्रीमियम कट्लरी, घरेलू उपयोग की उच्च गुणवत्ता वाली सामग्री, आधुनिक किचन अप्लायंसेस और आकर्षक गिफ्टिंग विकल्पों की विस्तृत श्रृंखला उपलब्ध है। 75वीं वर्षगांठ के इस विशेष अवसर पर शुरू हुआ यह नया स्वरूप न केवल एक व्यापारिक विस्तार है, बल्कि ग्राहकों के विश्वास और वर्षों की प्रतिष्ठा का उत्सव भी है। 'खूबचंद एण्ड सन्स मार्ट' अब नई ऊर्जा के साथ सेवा, गुणवत्ता और विश्वसनीयता के नए मानक गढ़ने की दिशा में अग्रसर है।

रिपोर्ट/फोटो
राकेश शर्मा 'राजदीप'

विद्यार्थी जीवन की वास्तविक पूंजी: अनुशासन, धैर्य और संस्कारों का अवलंब

शिक्षा केवल सूचनाओं का संचय नहीं, बल्कि आत्म-बोध और चरित्र-निर्माण की एक सतत प्रक्रिया है। भारतीय संस्कृति में विद्यार्थी का अर्थ ही वह है जो विद्या की अर्थी यानी याचना करता हो, और याचक कभी अहंकारी नहीं होता। किंतु आज के चकाचौंध भरे युग में विद्यार्थी जीवन की परिभाषा बदलती दिख रही है। वर्तमान पीढ़ी जहाँ तकनीक और बौद्धिक दक्षता में श्रेष्ठ है, वहीं संस्कारों, धैर्य और अनुशासन की कसौटी पर एक रिक्तता का अनुभव हो रहा है। आज के युवाओं के व्यवहार में जो 'हेकड़ी' या अनावश्यक आत्मविश्वास दिखता है, वह वास्तव में उनके व्यक्तित्व की नींव को खोखला कर रहा है। यह समय आत्म-चिंतन का है कि हम केवल साक्षर समाज बना रहे हैं या एक सुसंस्कृत राष्ट्र? इतिहास गवाह है कि इस धरा पर जितने भी 'ज्ञानी जीव' या महापुरुष हुए हैं, उनकी महानता का रहस्य केवल उनकी बुद्धि नहीं, बल्कि उनका वज्र जैसा अनुशासन था। अनुशासन कोई बाहरी बंधन नहीं है जिसे किसी संस्थान या समाज द्वारा थोपा जाए; यह तो वह आंतरिक व्यवस्था है जो हमारी ऊर्जा के बिखराव को रोकती है। जैसे एक नदी यदि अपने किनारों के अनुशासन को त्याग दे तो वह केवल विनाशकारी बाढ़ बन जाती है, ठीक वैसे ही बिना अनुशासन के विद्यार्थी की प्रतिभा और मेधा कुंठित होकर समाज के लिए घातक सिद्ध होने लगती है। जीवन में किसी भी संस्था, कार्यस्थल या संगठन का हिस्सा बनने पर आपकी सफलता इस बात पर निर्भर नहीं करती कि आप कितने चतुर हैं, बल्कि इस पर निर्भर करती है कि आप कितने मर्यादित और अनुशासित हैं। आज के परिवेश में 'धैर्य' का अभाव एक गंभीर व्याधि बन चुका है। 'तत्काल सफलता' की अंधी दौड़ ने युवाओं से उनकी सहनशीलता छीन ली है। परिणामतः, जीवन के सामान्य उतार-चढ़ावों में भी वे संतुलन खो देते हैं। हमें यह समझना होगा कि जीवन के संघर्ष ही हमें परिपक्व बनाते हैं। जैसे सोने को कुंदन बनने के लिए आग में तपना पड़ता है, वैसे ही विद्यार्थी को जीवन की चुनौतियों और विफलताओं को सहर्ष स्वीकार करना सीखना होगा। हार और जीत जीवन के दो पहलू हैं; सफलता में उन्माद से बचना और असफलता में अवसाद से दूर रहना ही वास्तविक शिक्षा है। बड़ों का आदर और गुरुओं के प्रति कृतज्ञता का भाव आज के आधुनिकतावादी परिवेश में धूमिल होता जा रहा है। यह विडंबना ही है कि जो हाथ ज्ञान का दीप जलाते हैं, आज की पीढ़ी उन्हीं पर प्रश्नचिह्न लगा रही है। बड़ों का अनुभव वह सुरक्षा कवच है जो हमें जीवन की अदृश्य खाइयों में गिरने से बचाता है। सम्मान देना कमजोरी नहीं, बल्कि एक सुदृढ़ व्यक्तित्व का परिचायक है। जहाँ सम्मान का भाव समाप्त हो जाता है, वहाँ सीखने की प्रक्रिया भी रुक जाती है। एक अहंकारी मन कभी नया ज्ञान ग्रहण नहीं कर सकता, क्योंकि वह स्वयं के 'होने' के मद में चूर रहता है। अंततः, शिक्षा का वास्तविक सरोकार अंकों की तालिका से नहीं, बल्कि व्यवहार की शालीनता से है। वर्तमान पीढ़ी को यह समझना होगा कि 'हेकड़ी' और उग्रता क्षणिक आकर्षण तो दे सकती है, किंतु सम्मान केवल 'विनय' से ही प्राप्त होता है। यदि आज का विद्यार्थी अनुशासन को अपना स्वभाव, धैर्य को अपना आधार और मर्यादा को अपना आचरण बना ले, तो वह न केवल अपने करियर के शिखर को छुएगा, बल्कि जीवन के हर संघर्ष को एक उत्सव की तरह जीने का सामर्थ्य भी प्राप्त करेगा। **मयंक जैन: मंगलायतन विवि. अलीगढ़**

किंडर केयर गुरमत क्विज में 350 बच्चों ने लिया भाग

जयपुर. शाबाश इंडिया। खालसा सर्जना पर्व वैसाखी के अवसर पर ''कौन बनेगा गुरसिख बच्चा'' संस्था (केबीजीबी), जयपुर द्वारा किंडर केयर गुरमत क्विज का आयोजन गुरु गोबिंद सिंह पार्क में किया गया। इस प्रतियोगिता में 3 से 20 वर्ष तक के बच्चों ने अपनी आयु के अनुसार सिख धर्म, संस्कृति, इतिहास और गुरबाणी से संबंधित प्रश्नों के उत्तर कंप्यूटर के माध्यम से दिए। जयपुर की समूह स्त्री सत्संग समिति द्वारा छोटे बच्चों के लिए धार्मिक चिन्ह बनाने एवं उनमें रंग भरने की प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। क्विज संयोजक सरदार सुरेंद्र सिंह ने बताया कि प्रतियोगिता में कुल 350 बच्चों ने भाग लिया। सही उत्तर देने वाले प्रतिभागियों को तुरंत पुरस्कार देकर प्रोत्साहित किया गया। विभिन्न समूहों में टॉपर रहे मन्नत कौर, तन्मय सिंह, एक्कमजोत सिंह, हरमीत सिंह, कंवलप्रीत कौर एवं सिमरन कौर को ₹किंडर केयर गुरसिख बच्चा ऑफ जयपुर₹ अवॉर्ड से सम्मानित किया गया और उन्हें शील्ड प्रदान की गई। इस अवसर पर संस्था के प्रधान सरदार जसबीर सिंह, महासचिव सरदार सुखदेव सिंह, पूर्व पार्षद सुरेंद्र सिंह राबिन एवं गुरुद्वारा गुरुनानक पुरा के सचिव जोगिंदर सिंह ने विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए। गुरमत क्विज का आयोजन किंडर केयर स्कूल द्वारा प्रायोजित किया गया। कार्यक्रम का संचालन मनमीत कौर, हरप्रीत कौर, रविंदर सिंह एवं अर्जुन सिंह ने किया।

ओंकार सिंह-पूर्व अध्यक्ष,
केबीजीबी संस्था, जयपुर, मोबाइल: 9982222606

कला

जब कला और नवाचार बनते हैं बदलाव की भाषा

दिलीप कुमार पाठक

कहते हैं कि कोरे कागज पर खींची गई पहली टेढ़ी-मेढ़ी लकीर सिर्फ एक आकृति नहीं होती, बल्कि भीतर जन्म ले रहे विचार का पहला रूप होती है। यह लकीर उस सृजनात्मक बेचैनी की गवाह होती है, जो हमें कुछ नया रचने के लिए प्रेरित करती है। आज का दौर केवल सूचनाओं का नहीं, बल्कि उन्हें प्रभावी ढंग से प्रस्तुत कर नए रास्ते खोजने का है। कला और नवाचार भले अलग-अलग प्रतीत हों, लेकिन वास्तव में ये एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। कला हमें संवेदनशील बनाती है, जबकि नवाचार उन संवेदनाओं को समाधान में बदलता है। भारतीय परंपरा में कला केवल सजावट का माध्यम नहीं रही, बल्कि जीवन जीने की शैली रही है। गांवों की कच्ची दीवारों पर उकेरी गई मधुबनी या वरली चित्रकला केवल चित्र नहीं, बल्कि संस्कृति और इतिहास की जीवंत अभिव्यक्ति हैं। दक्षिण भारत के मंदिरों की सूक्ष्म नक्काशी हो या बनारस के घाटों पर गूंजती शास्त्रीय धुनें हर परंपरा में सृजन और नवाचार का मेल दिखाई देता है। मिट्टी का साधारण घड़ा जब इस तरह बनाया गया कि वह पानी को ठंडा रखे और देखने में सुंदर भी लगे, तो वह कला और विज्ञान के अद्भुत संगम का उदाहरण बन गया। हर वर्ष 15 अप्रैल को विश्व कला दिवस मनाया जाता है, जो महान कलाकार लियोनार्डो दा विंची की स्मृति से जुड़ा है। उन्होंने यह सिद्ध किया कि एक कलाकार के भीतर वैज्ञानिक और इंजीनियर भी होता है। आज भारत में भी इसी सोच को आगे बढ़ाने की आवश्यकता है। आधुनिक समय में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का प्रभाव तेजी से बढ़ रहा है, लेकिन इसके बीच मानवीय संवेदनाओं से भरी कला की महत्ता और अधिक बढ़ गई है। मशीनें आंकड़ों का विश्लेषण कर सकती हैं, पर वे भावनाओं को महसूस नहीं कर सकतीं। एक कलाकार अपने अनुभवों, संघर्षों और संवेदनाओं को जिस गहराई से अभिव्यक्त करता है, वह किसी मशीन के लिए संभव नहीं है। बदलते भारत में कला और तकनीक का नया संबंध उभर रहा है। आज का युवा अपनी परंपरा को छोड़ नहीं रहा, बल्कि उसे आधुनिक साधनों से जोड़ रहा है। एक बुनकर जब डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से अपने डिजाइन वैश्विक बाजार तक पहुंचाता है, तो वह परंपरा को नया जीवन देता है।

संपादकीय

एशिया के लिए ऊर्जा संकट की चेतावनी

अमेरिका द्वारा होर्मुज जलडमरूमध्य में ईरानी बंदरगाहों से जुड़े जहाजों पर नौसैनिक नाकेबंदी लागू करने का निर्णय वैश्विक ऊर्जा बाजार के लिए गंभीर संकेत है। डोनाल्ड ट्रंप के निर्देश पर उठाया गया यह कदम अमेरिका-ईरान तनाव का नया चरण है, जिसका सबसे अधिक प्रभाव एशियाई देशों पर पड़ रहा है। दुनिया के कुल तेल परिवहन का लगभग 20 प्रतिशत इसी मार्ग से गुजरता है, जिससे भारत, चीन, जापान और दक्षिण कोरिया जैसे देश गहराई से प्रभावित हैं। नाकेबंदी के बाद कच्चे तेल की कीमतें 100 डॉलर प्रति बैरल के पार पहुंच चुकी हैं, जिससे वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला अस्थिर हो गई है। इस निर्णय का तात्कालिक असर बाजार में साफ दिखाई दे रहा है।

अमेरिकी सेंट्रल कमांड (सेंटकॉम) के अनुसार यह कार्रवाई केवल ईरान से जुड़े जहाजों पर केंद्रित है, लेकिन वास्तविकता यह है कि बीमा कंपनियां, शिपिंग कंपनियां और व्यापारी जोखिम से बचने के लिए पूरे क्षेत्र से दूरी बना रहे हैं। परिणामस्वरूप जहाजों के मार्ग बदल रहे हैं, परिवहन लागत बढ़ रही है और आपूर्ति बाधित हो रही है। सऊदी अरब सहित कई खाड़ी देशों ने भी इस कदम पर चिंता जताई है, क्योंकि उन्हें क्षेत्रीय अस्थिरता और संभावित जवाबी हमलों का खतरा महसूस हो रहा है। एशिया के लिए यह स्थिति विशेष रूप से चिंताजनक है। भारत अपनी ऊर्जा जरूरतों का लगभग 85 प्रतिशत आयात करता है, जिसमें बड़ा हिस्सा खाड़ी क्षेत्र से आता है। इस नाकेबंदी का सीधा असर पेट्रोल-डीजल की कीमतों, महंगाई और आर्थिक विकास पर पड़ेगा। चीन, जो दुनिया का सबसे बड़ा तेल आयातक है, वैकल्पिक आपूर्ति स्रोतों की तलाश में जुटा है, लेकिन इससे लागत बढ़ रही है। जापान और दक्षिण कोरिया की औद्योगिक इकाइयां पहले से ही ऊर्जा दबाव झेल रही हैं। एशियाई शेयर बाजारों में गिरावट और निवेशकों की चिंता इस संकट की गंभीरता को दशार्ती है। भारत में मौद्रिक नीति पर भी दबाव बढ़ सकता है, जिससे ब्याज दरों में बदलाव की संभावना बनती है। यह संकट केवल तेल तक सीमित नहीं है। होर्मुज मार्ग से उर्वरक, रसायन और अन्य आवश्यक वस्तुएं भी एशिया तक पहुंचती हैं। इससे कृषि और विनिर्माण क्षेत्रों पर भी असर पड़ेगा। चीन ने इस स्थिति पर कड़ा रुख अपनाते हुए बाहरी हस्तक्षेप का विरोध किया है, जबकि भारत जैसे देश कूटनीतिक संतुलन बनाए रखने की चुनौती से जूझ रहे हैं। एक ओर अमेरिका के साथ रणनीतिक संबंध हैं, तो दूसरी ओर ईरान ऊर्जा आपूर्ति का महत्वपूर्ण स्रोत है। अमेरिकी प्रशासन का तर्क है कि यह नाकेबंदी ईरान को परमाणु कार्यक्रम सीमित करने और क्षेत्र में स्थिरता बनाए रखने के लिए मजबूर करेगी। हालांकि इतिहास बताता है कि ऐसी कार्रवाइयां अक्सर तनाव को और बढ़ा देती हैं। 1980 के दशक का टैंकर युद्ध इसका उदाहरण है, जिसने पूरे खाड़ी क्षेत्र को अस्थिर कर दिया था। वर्तमान परिस्थितियां उससे भी अधिक जटिल हैं। ईरान ने इस कदम को ''समुद्री डकैती'' बताते हुए कड़े जवाब की चेतावनी दी है।

-राकेश जैन गोदिका

परिदृश्य

व्यक्तित्व निर्माण की आधारशिला

संजय गोस्वामी

हर बालक एक अनगढ़ पत्थर के समान है, जिसमें एक सुंदर मूर्ति छिपी होती है। माता-पिता और शिक्षक उस शिल्पी की भूमिका निभाते हैं जो अनावश्यक पत्थर को हटाकर उस मूर्ति को प्रकट करते हैं। वास्तव में, व्यक्तित्व का निर्माण केवल सुविधाओं से नहीं, बल्कि उस तराशने की प्रक्रिया से होता है जिसे हम 'संघर्ष' कहते हैं। आज के दौर में माता-पिता बच्चों के जीवन का 90 प्रतिशत संघर्ष स्वयं झेल लेते हैं। बच्चों को लगता है कि शिक्षा और सुविधाएं उनका अधिकार हैं, जबकि ये माता-पिता का उपकार हैं। परिंदा भी अपने शावक को उड़ना सिखाने के लिए पेड़ से धक्का देता है; यदि वह धक्का न दे, तो शावक कभी आसमान की ऊंचाइयों को नहीं छू पाएगा। हमें यह समझना होगा कि दुर्भाग्य परेशान करता है, लेकिन संघर्ष तराशता है। बच्चों को पांच गुण अवश्य सिखाने चाहिए: परिश्रम, ईमानदारी, सहनशीलता, सहयोग और परिणाम के प्रति बेफिक्र होना। स्वामी विवेकानंद के अनुसार, हम स्वयं को स्वतंत्र कहते हैं, लेकिन हम एक क्षण के लिए भी अपने मन पर शासन नहीं कर सकते। हमारी आंखें किताब पर होती हैं, पर मन भविष्य के ख्याली पुलाव पकाता है। जब तक मन अनुशासित नहीं है, तब तक वास्तविक स्वतंत्रता और व्यक्तित्व विकास संभव नहीं है। भगवद्गीता भी यही कहती है कि असंयमित मन शत्रु है और संयमित मन सबसे अच्छा मित्र। शिक्षा को एक 'त्रिमुखी प्रक्रिया' माना गया है जिसमें शिक्षक, शिक्षार्थी और पाठ्यक्रम शामिल हैं। आदर्श रूप में, शिक्षक के लिए 'साध्य' (लक्ष्य) विद्यार्थी होना चाहिए और पाठ्यक्रम केवल एक 'साधन'। परंतु समय के साथ यह धारणा उलट गई है। आज शिक्षा का केंद्र केवल पाठ्यक्रम और अंक-अर्जन बनकर रह गया है। शिक्षण संस्थानों का उद्देश्य अब केवल उत्तम परीक्षाफल तक सीमित है। जैसे-जैसे स्कूली बस्ते का बोझ बढ़ रहा है, विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास की गति घट रही है। प्राचीन काल में 'गुरु और शिष्य' के बीच जो आत्मिक संबंध था, वह आज 'शिक्षक और शिक्षार्थी' के बीच केवल एक औपचारिक लेन-देन बनकर रह गया है। व्यक्तित्व निर्माण और संस्कारों का बीजारोपण तभी संभव है, जब शिक्षक पुनः गुरु की भूमिका में आएं।

वंशानुक्रम, परिवेश और संस्कार

व्यक्तित्व विकास में दो तत्व प्रधान हैं: वंशानुक्रम (जो जन्मजात शक्तियां देता है) और परिवेश (जो उन शक्तियों को सिद्ध करने की सुविधा देता है)। आज की शिक्षा व्यवस्था केवल साक्षर बनाने तक सीमित है, जबकि शिक्षा का परम उद्देश्य संस्कार था। 'विद्या ददाति विनयम्' (विद्या विनय देती है) का सिद्धांत ओझल हो गया है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने पिता के वचनों के लिए राजपाठ त्यागा; यह संस्कार ही व्यक्तित्व की असली ऊंचाई है। अचानक आए संघर्ष से वही लोग टूटते हैं जिनकी तैयारी नहीं होती। यदि हम आज के बच्चों को संघर्ष से पूरी तरह बचाएंगे, तो वे भविष्य की चुनौतियों में बिखर जाएंगे। टूटे हुए को जोड़ा जा सकता है, लेकिन बिखरे हुए व्यक्तित्व को समेटना कठिन होता है। हमें अपने मन को प्रशिक्षित करना होगा और यह समझना होगा कि माता-पिता का अनुशासन और जीवन का संघर्ष ही वह भट्टी है, जिसमें तपकर एक साधारण बालक 'कुंदन' बनता है।

धैर्य और सकारात्मक सोच

मनुष्य के जीवन में धैर्य और सकारात्मक सोच दो ऐसे गुण हैं, जो उसे कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी संभाल कर रखते हैं। ये दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं–जहां धैर्य हमें स्थिर रखता है, वहीं सकारात्मक सोच हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। धैर्य का अर्थ केवल इंतजार करना नहीं, बल्कि कठिन समय में शांत और संयमित रहना है। जीवन में कई बार ऐसे क्षण आते हैं जब हमारी इच्छाएँ तुरंत पूरी नहीं होतीं, प्रयासों के बावजूद सफलता दूर नजर आती है। ऐसे समय में यदि व्यक्ति धैर्य खो देता है, तो वह गलत निर्णय ले सकता है। इसके विपरीत, धैर्यवान व्यक्ति हर परिस्थिति को समझकर सही समय का इंतजार करता है। सकारात्मक सोच का अर्थ है हर परिस्थिति में अच्छाई देखने की दृष्टि रखना। जब व्यक्ति सकारात्मक सोच रखता है, तो वह समस्याओं को अवसर में बदलने की क्षमता विकसित कर लेता है। वह असफलता से घबराता नहीं, बल्कि उससे सीख लेकर आगे बढ़ता है। सकारात्मक सोच व्यक्ति के मन में आशा, उत्साह और आत्मविश्वास बनाए रखती है।

धैर्य और सकारात्मक सोच का संबंध अत्यंत गहरा है। यदि व्यक्ति के पास धैर्य है, तो वह नकारात्मक विचारों से दूर रहकर सकारात्मक सोच को बनाए रख सकता है। वहीं सकारात्मक सोच व्यक्ति को धैर्य रखने की शक्ति प्रदान करती है। ये दोनों मिलकर जीवन की चुनौतियों का सामना करने में सहायक बनते हैं। आज के तेज-रफ्तार जीवन में लोग जल्दबाजी में निर्णय लेने लगते हैं और छोटी-छोटी असफलताओं से निराश हो जाते हैं। ऐसे समय में धैर्य और सकारात्मक सोच का महत्व और भी बढ़ जाता है। ये गुण व्यक्ति को मानसिक शांति प्रदान करते हैं और उसे जीवन में संतुलन बनाए रखने में मदद करते हैं। अंततः कहा जा सकता है कि धैर्य और सकारात्मक सोच सफलता और संतोषपूर्ण जीवन की आधारशिला हैं। यदि हम इन गुणों को अपने जीवन में अपनाते हैं, तो न केवल हम अपनी समस्याओं का समाधान कर सकते हैं, बल्कि एक सुखद और संतुलित जीवन भी जी सकते हैं। अनिल माथुरः ज्वाला-विहार, जोधपुर।

जैन महिला जागृति मंच खेरवाड़ा को मिला सर्वश्रेष्ठ शाखा अवार्ड

खेरवाड़ा. शाबाश इंडिया

सलूंबर में आयोजित 23वें क्षेत्रीय अधिवेशन (जोन 5) में जैन महिला जागृति मंच खेरवाड़ा को वर्ष 2025-2026 के लिए ''सर्वश्रेष्ठ शाखा अवार्ड'' से सम्मानित किया गया। यह सम्मान राष्ट्र संत पुलक सागर गुरुदेव के सान्निध्य में प्रदान किया गया। इस अवसर पर राष्ट्र संत पुलक सागर महाराज ने खेरवाड़ा मंच को आशीर्वाद देते हुए उसके उत्कृष्ट कार्यों की भूरी-भूरी प्रशंसा की तथा भविष्य में भी इसी प्रकार समाजहित में सक्रिय रहने के लिए प्रेरित किया। अधिवेशन में मंच की अध्यक्ष मीनाक्षी जैन, संरक्षक किरण कोठारी, पूर्व अध्यक्ष चयनिका मेहता, नीतू कोठारी, भारती वानावत एवं अर्चना कोठारी सहित अन्य सदस्य उपस्थित रहे। सभी ने इस उपलब्धि पर हर्ष व्यक्त किया।

सर्व समाज सेवा समिति ने चलाया पक्षी परिंडा अभियान 2026

जयपुर. शाबाश इंडिया। ग्रीष्म ऋतु में पक्षियों के लिए पानी की व्यवस्था करने के उद्देश्य से सर्व समाज सेवा समिति, इंदिरा गांधी नगर द्वारा ''पक्षी परिंडा अभियान 2026'' चलाया गया। इस अभियान के तहत पक्षियों के लिए दाना-पानी की व्यवस्था कर उन्हें गर्मी से राहत पहुंचाने का प्रयास किया गया। समिति के सदस्यों ने लोगों से अपील करते हुए कहा कि वे अपनी छत, बालकनी या बगीचे में मिट्टी के उथले सकोरों (कुंडों) में प्रतिदिन साफ और ताजा पानी रखें तथा इन्हें छायादार स्थान पर रखें, ताकि पानी गर्म न हो और पक्षियों को आसानी से पीने के लिए उपलब्ध हो सके। समिति द्वारा इंदिरा गांधी नगर, जगतपुरा क्षेत्र में निरंतर सामाजिक कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। डॉ. अशोक दुबे ने जानकारी देते हुए बताया कि इस अभियान के अंतर्गत श्री 1008 बालाजी महाराज मंदिर, सेक्टर 9, गंगेश्वर महादेव मंदिर, सेक्टर 6 तथा महादेव हनुमान मंदिर, सेक्टर 5 में बड़े स्तर पर परिंडे लगाए गए। साथ ही दाना और पानी की उचित व्यवस्था भी की गई। इस अभियान में सेक्टर 9 के मंदिर पुजारी घनश्याम जी, सेक्टर 6 के पुजारी प्रभु नारायण जी तथा सेक्टर 5 के पुजारी बाबूलाल जी का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम में सर्व समाज सेवा समिति के शिव चरण मीणा, नरेश शर्मा, विनोद जी, अरुण जी, नीतेश शर्मा, संदीप बानूड़ा, अभय प्रताप सिसोदिया, रामचंद्र सैनी, राम अवतार मीणा, राहुल, शिवचरण, राजेंद्र उपाध्याय एवं डॉ. अशोक दुबे सहित अन्य सदस्य उपस्थित रहे।

रोटरी क्लब जयपुर नॉर्थ के सदस्य सिंगापुर पहुंचे, अंतरराष्ट्रीय फेलोशिप का अनूठा उदाहरण

सिंगापुर. शाबाश इंडिया। रोटरी क्लब जयपुर नॉर्थ के सदस्य अपनी अंतरराष्ट्रीय सिंगापुर-मलेशिया यात्रा के अंतर्गत मलेशिया प्रवास पूर्ण करने के बाद उत्साह और उमंग के साथ सिंगापुर पहुंच गए हैं। इस अवसर पर सभी सदस्यों में हर्ष और उल्लास का वातावरण देखने को मिला। यह यात्रा केवल पर्यटन तक सीमित नहीं है, बल्कि आपसी संबंधों को मजबूत करने तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर रोटरी की फेलोशिप को सुदृढ़ करने का एक महत्वपूर्ण प्रयास भी है। गौरतलब है कि रोटरी क्लब जयपुर नॉर्थ द्वारा पिछले दो वर्षों में यह तीसरी अंतरराष्ट्रीय यात्रा आयोजित की जा रही है, जो क्लब की सक्रियता, एकता और मजबूत संगठनात्मक भावना को दर्शाती है। यात्रा के दौरान सदस्य सिंगापुर के प्रमुख और विश्वस्तरीय पर्यटन स्थलों का भ्रमण करेंगे तथा वहां की आधुनिकता, स्वच्छता और सुव्यवस्थित जीवनशैली का अनुभव प्राप्त करेंगे। यह यात्रा सभी सदस्यों के लिए नए अनुभव, आपसी समन्वय और यादगार पलों का एक विशेष अवसर सिद्ध होगी। रोटरी क्लब जयपुर नॉर्थ के अध्यक्ष अनिल जैन ने बताया कि यह यात्रा क्लब के लिए गर्व का विषय है तथा इससे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मित्रता, सहयोग और सेवा के मूल्यों को और अधिक मजबूती मिलेगी।

तप एवं दान के विसर्जन का अ-क्षय पर्व: अक्षय तृतीया

पदम चन्द गांधी

भारतीय संस्कृति में हर पर्व एवं हर त्यौहार एक विशेष संदेश लेकर जागृति उत्पन्न करता है। इन पर्वों में एक अनोखा पर्व है अक्षय तृतीया ।जो न केवल तप एवम दान की महिमा को प्रकट करता है वरन भारतीय संस्कृति एवं परंपराओं का लौकिक एवं अलौकिक महत्व को भी समझाता है। भारतीय ज्योतिष के अनुसार चंद्रमा की कलाओं की घटत बढ़त के अनुसार तिथियां घटती बढ़ती रहती है, लेकिन अक्षय तृतीया एसी तिथि है जो कभी घटती बढ़ती नहीं है, इसलिए इसे आखातीज भी कहा गया है। इस पर्व के प्रति सभी जाति, वर्ग,वर्ण, संप्रदाय और धर्म का आदर भाव अभिन्नता में एकता का प्रिय संदेश देता है।लौकिक महत्व के अनुसार यह अबूझ मांगलिक एवं शुभ दिन है।क्योंकि इस दिन बिना किसी मुहूर्त के विवाह एवं मांगलिक कार्य किए जाते हैं। अलौकिक महत्व के अनुसार अक्षय तृतीया दान और तप के विसर्जन का संदेश लेकर आती है। व्यक्ति यदि संग्रह करता है किंतु विसर्जन नहीं करता है तो वह बीमारी से बच नहीं सकता। वह क्षय एवं क्षीण हो जाता है। अतः बाहर के संग्रह को दान से घटाया जा सकता है तथा भीतर के संग्रह को तप से। उत्तराध्ययन सूत्र के छठे अध्ययन की पहली गाथा स्पष्ट करती है अविद्या, मिथ्यात्व, वासना, माया और मोह के कारण से जीव बार-बार क्षय करता है। जीव अजीव तो बन नहीं सकता, वह लुप्त हो जाता है। मूढ जीव चतुर्गतिक संसार में भ्रमण करते हुए बार-बार लुप्त हो जाता है ,क्षय को प्राप्त करता है । एक शरीर के साथ अनंत अनंत जीव निरंतर क्षय को प्राप्त होते हैं। जीव के बार-बार लुप्त होने एवं क्षीणता से बचने के दो ही उपाय बताए हैं पहला तप और दूसरा दान। अक्षय सुख को प्राप्त करने का मार्ग है तप। साधक को चेतना के स्थान पर अवस्थित होना है तो तप का मार्ग श्रेष्ठ है।क्योंकि तप जीव को ऊपर उठाने में सहायक होता है । तप द्वारा कषायों को कम किया जा सकता है, कर्मों की निर्जरा की जा सकती है। आज कई तपस्वी वर्षों से एकांतर तप का पारणा करते है अर्थात एक दिन उपवास एक दिन आहार इस प्रकार पूरे वर्ष यही क्रम तप के रूप में चलता है उसी के पारणे का दिवस है। जैन संस्कृति एवं दर्शन के अनुसार प्रागैतिहासिक काल के एक शलाका पुरुष भगवान ऋषभदेव जिन्होंने एक वर्ष 25 दिन की तपस्या का पारणा अक्षय तृतीया के दिन संसारी सुप्रौत्र श्रेयांश कुमार द्वारा ईक्षु रस के सुपात्रदान द्वारा ग्रहण किया। इसी महान तप को आज एकांतर तप के पारणे के रूप में मनाया जाता है । तप करना हितकारी है, जो इहलोक के लिए नहीं, कीर्ती एवं यश के लिए नहीं , यह तो मात्र कर्म निर्जरा के लिए है। प्रभु ऋषभदेव की साधना यह प्रेरणा देती है एकांतर तप कर निर्मल बने, दान देवे, ममता का विसर्जन करें, माधुरी रस का पान कर माधुर्य सुधा से आप्लावित बने।इसी के द्वारा अक्षय सुख को प्राप्त किया जा सकता है। ईक्षु रस से परणे का अर्थ है वह रस जो मीठा होता है ,सद्भावना घोलता है। आज के परिपेक्ष में जीवन मे जो कड़वाहट बढ़ रही है इसे मिटाने के लिए प्रेम रूपी ईक्षु रस की जरूरत है। सद्भावना की जरूरत है। एक दूसरे में जो वैमनस्य फैल रहा है उसे मिटाने की प्रेरणा ईक्षु रस ही देता है। अक्षय तृतीया प्रेरणा देती है, व्यक्ति-व्यक्ति में,संघ - समाज में प्रेम का संचार हो, प्रेम का वातावरण बने। घर परिवार प्रेम से रहे। यह पर्व एक दूसरे को जोड़ने का प्रसंग है, टूटने या तोड़ने का नहीं। आज मन की दूरियां बढ़ रही है, व्यक्ति एवं समाज टूट रहे हैं। अक्षय तृतीया संदेश देती है हम जुड़ेंगे संघ जुड़ेगा, देश जुड़ेगा, हम अक्षय रहेंगे, मजबूत रहेंगे तथा संगठित रहेंगे। दान में सर्वश्रेष्ठ दान सुपात्र दान है जिसे श्रेयांश कुमार ने प्रभु ऋषभदेव को दिया, तब देवो ने आकाश मे अहो दानम,अहो दानम का शंखनाद किया। आज भी साधक अभयदान, स्वधर्मि वात्सल्य,

दान और अनुकंपा दान द्वारा क्षय एवं क्षीण होने से बचने का प्रयास करते हैं।अक्षय पथ पर यदि कोइ अग्रसर होता है तो दान सबसे सुलभ रास्ता है ।ममता के घटाने का यदि कोई मार्ग है तो वह केवल दान है। दान सुपात्र हो स्वार्थ रहित हो कामना रहित हो,अपने को हल्का करने की भावना से युक्त हो। अतः स्पष्ट है कि अक्षय सुख की ओर ले जाने वाला कोई उपाय है तो वह ताप एवं दान ही है। वर्तमान समय में संत ही अक्षय सुख प्राप्ति की राह प्रशस्त करते हैं क्योंकि संत चरणों में आने वाले को जीवन निर्माण की प्रेरणा मिलती है। मान्यताओं के अनुसार जिस प्रकार प्रभु ऋषभदेव ने असी मसी और कृषि का निर्माण कर जीवन की नई राह प्रस्तुत की, इस परंपरा को निभाते हुए पुराने समय में इस दिन राजा अपने राज दरबार में किसानों को बुलाकर अगले वर्ष बुआई हेतु विशेष प्रकार के बीज उपहार मे देते थे, जिसकी मान्यता थी कि किसानों के धान्य कोठार कभी खाली नहीं रहे। भविष्य पुराण एवं स्कंद पुराण के अनुसार आज के दिन रेणुका के गर्भ में भगवान विष्णु ने परशुराम के रूप में जन्म लिया। इसी दिन मां गंगा, मां अन्नपूर्णा का जन्म हुआ। प्रसंग यह भी आता है कि इसी दिन द्रोपती का चीर हरण हुआ जिसे कृष्ण ने बचाया। इसी दिन कृष्ण सुदामा का मिलन हुआ जो मित्रता की अनोखी मिसाल है। आज ही के दिन कुबेर को धन का खजाना प्राप्त हुआ इसलिए कुबेर की भी पूजा करते हैं। इस प्रकार स्पष्ट अक्षय तृतीया तप और दान के विसर्जन का अ-क्षय संदेश देने के साथ-साथ भारतीय आध्यात्मिक संस्कृति के अनूठे संगम का दिवस भी है।

(लेखक व. साहित्यकार एवं से. नि. वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी है)

द्वादशवर्षीय स्वाध्याय पाठ्यक्रम की परीक्षा संपन्न

चित्तौड़गढ़. शाबाश इंडिया

परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के मंगल आशीर्वाद एवं परम पूज्य मुनि पुंगव सुधा सागर जी महाराज की प्रेरणा से 1996 में सांगानेर, जयपुर में श्री दिगंबर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान की स्थापना हुई। महिला महासमिति संभाग अध्यक्ष मंजु सेठी ने बताया कि 12 वर्षीय स्वाध्याय पाठ्यक्रम संस्थान द्वारा संचालित भारतवर्षीय श्रमण संस्कृति परीक्षा बोर्ड के नियंत्रण में संचालित होता है। इस पाठ्यक्रम की परीक्षा वर्ष में एक बार विभिन्न परीक्षा केंद्रों पर आयोजित की जाती है। संयोजिका मधु अग्रवाल ने जानकारी देते हुए बताया कि शास्त्रीनगर स्थित दिगंबर जैन मंदिर परिसर में बनाए गए परीक्षा केंद्र पर सांगानेर से पधारे विद्वान विजय जैन (निवासी टीकमगढ़) के सानिध्य में परीक्षा संपन्न हुई। परीक्षा का शुभारंभ दीप प्रज्वलन एवं नमोकार जाप के साथ किया गया। परीक्षार्थियों ने निर्धारित वेशभूषा में पूरे उत्साह और अनुशासन के साथ परीक्षा में भाग लिया। नया सत्र प्रतिवर्ष अगस्त माह से प्रारंभ होता है तथा परीक्षा परिणाम भी अगस्त तक घोषित किए जाते हैं। आशा सिंघई ने बताया कि विद्यार्थियों के लिए अनुप्रयोग और जूम के माध्यम से ऑनलाइन कक्षाओं का भी नियमित संचालन किया जाता है, जिससे दूरस्थ स्थानों के छात्र भी लाभान्वित हो रहे हैं।इस अवसर पर सकल दिगंबर जैन समाज के अध्यक्ष पारस सोनी, महेंद्र टोंग्या, रमेश अजमेरा, बसंती लाल वैद, दिलीप सोगानी, राजेंद्र अग्रवाल, घीसूलाल बड़जात्या, नवीन जैन एवं सुनील पाटनी सहित समाजजन उपस्थित रहे। सभी ने परीक्षार्थियों को बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दीं। अंत में आशा वैद ने सभी का आभार व्यक्त किया।

णमोकार मंत्र के चिंतन से प्राप्त होता है पुण्य रूपी नवनीत: आचार्य वर्धमान सागर जी

जयपुर. शाबाश इंडिया। वात्सल्य वारिधि आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज संघ सहित श्याम नगर, जयपुर में विराजमान हैं। आज की धर्मसभा में प्रवचन देते हुए आचार्य श्री ने णमोकार मंत्र का महत्व बताते हुए कहा कि इस मंत्र का एक आसन पर बैठकर मन को स्थिर और एकाग्र कर चिंतन करने से पुण्य रूपी नवनीत की प्राप्ति होती है। उन्होंने बताया कि णमोकार मंत्र 35 अक्षरों का एक अत्यंत पवित्र मंत्र है, जिसमें अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और सर्व साधु–इन पंच परमेष्ठियों का समावेश है। इस मंत्र का श्रद्धा और भक्ति भाव से मनन एवं चिंतन करने से यह सहज ही स्मरण हो जाता है और मन में स्थिर हो जाता है। आचार्य श्री ने कहा कि मनुष्य अपने लौकिक जीवन में किए गए कार्यों का फल तो प्राप्त करता है, लेकिन आत्मा के हित के कार्यों को अक्सर भूल जाता है। जो बातें हमें कष्ट देती हैं, उन्हें हम बार-बार याद करते हैं, जबकि आत्मकल्याण से जुड़े प्रवचन और श्रेष्ठ विचारों को याद नहीं रखते। उन्होंने आगे कहा कि आत्महित के कार्य मन, वचन और काया की स्थिरता के साथ करने चाहिए। जिस प्रकार खारे समुद्र के जल का मंथन करने से अमृत की प्राप्ति हुई, उसी प्रकार देव, शास्त्र और गुरु की वाणी का चिंतन रूपी मंथन करने से पुण्य रूपी नवनीत प्राप्त होता है। इस अवसर पर आर्यिका श्री दिव्य यशमति जी का विगत दिवस केशलोचन संस्कार भी संपन्न हुआ। आचार्य श्री वर्धमान सागर जी के दर्शन हेतु जयपुर सहित विभिन्न नगरों से श्रद्धालु पहुंच रहे हैं और उन्हें अपने-अपने मंदिर व कॉलोनियों में पधारने का निमंत्रण दे रहे हैं।

प्रतिभावान छात्राओं को शैक्षणिक सामग्री की सहायता प्रदान

अजमेर. शाबाश इंडिया। लायंस क्लब्स इंटरनेशनल 3233 ई 2 के सर्वप्रिय प्रांतपाल लायन रामकिशोर गर्ग द्वारा प्रांत को दिए गए प्रमुख कार्यक्रम ''आओ खुशियां बांटें'' के अंतर्गत विगत शैक्षणिक सत्र में उत्कृष्ट परिणाम प्राप्त करने वाली 20 छात्राओं को शैक्षणिक सहयोग प्रदान किया गया। अजमेर के विभिन्न क्षेत्रों में निवास करने वाली इन छात्राओं के उत्साहवर्धन हेतु गणवेश, स्कूल बैग (पिट्ठू बैग), उत्तर पुस्तिकाएं, स्कूल शूज एवं मोजे सहित अन्य आवश्यक सामग्री वितरित की गई। इस पहल का उद्देश्य प्रतिभावान छात्राओं को प्रोत्साहित कर उनकी शिक्षा को आगे बढ़ाने में सहयोग देना है। क्लब अध्यक्ष लायन मुकेश कर्णावट ने बताया कि कार्यक्रम का सफल आयोजन संयोजक लायन अतुल पाटनी के निर्देशन में किया गया। इस कार्य में समाजसेवी लायन राकेश पालीवाल एवं पूर्व क्षेत्रीय अध्यक्ष लायन मधु पाटनी का विशेष सहयोग रहा। शैक्षणिक सामग्री प्राप्त कर छात्राओं एवं उनके अभिभावकों ने क्लब के सेवा कार्यों की सराहना करते हुए आभार व्यक्त किया।

भीलवाड़ा में उमड़ा आस्था का सैलाब, शिव महापुराण कथा ने रचा भक्ति का नया इतिहास

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया

धर्मनगरी भीलवाड़ा में मंगलवार को प्रख्यात कथावाचक पंडित प्रदीप मिश्रा के मुखारविंद से हो रही श्री शिव महापुराण कथा के विराम दिवस पर श्रद्धा और आस्था का ऐसा सैलाब उमड़ा, जैसा पहले कभी नहीं देखा गया। संकटमोचन हनुमान मंदिर के महंत बाबूगिरीजी महाराज के प्रयासों एवं आयोजन समिति के अध्यक्ष विधायक अशोक कोठारी के नेतृत्व में हजारों सेवादारों की समर्पित सेवाओं से आजादनगर स्थित मेडिसिटी ग्राउंड में आयोजित इस कथा के समापन पर श्रद्धालुओं का जनसैलाब उमड़ पड़ा। लाखों की क्षमता वाला विशाल पांडाल छोटा पड़ गया और श्रद्धालु पांडाल के बाहर खुले आसमान के नीचे भी कथा श्रवण करते नजर आए। कथा का समय भले ही सुबह 8 से 11 बजे तक निर्धारित था, लेकिन श्रद्धालु रात से ही पहुंचने लगे। सुबह होते-होते स्थिति यह थी कि पांडाल में पैर रखने तक की जगह नहीं बची। विराम दिवस पर पंडित प्रदीप मिश्रा ने कहा कि शिव महापुराण कथा जीवन की व्यथा मिटाने का माध्यम है और इसमें आने वाला कोई भी श्रद्धालु खाली हाथ नहीं जाता। उन्होंने कहा कि बाबूगिरी महाराज के अथक प्रयासों से भीलवाड़ा में ऐसा आयोजन संभव हुआ, जिसने नगर को एक प्रकार से कुंभ का स्वरूप दे दिया। उन्होंने गौसेवा का महत्व बताते हुए कहा कि गौमाता के बिना सनातन धर्म अधूरा है। शिक्षा में गौमाता से जुड़े विषयों को शामिल करने और उन्हें राष्ट्रमाता घोषित करने की आवश्यकता पर भी जोर दिया। इस अवसर पर उज्जैन के महामंडलेश्वर स्वामी शांतिस्वरूपानंद गिरी महाराज ने भी संबोधित करते हुए आयोजन की सराहना की। आयोजन समिति के अध्यक्ष अशोक कोठारी ने सभी सहयोगियों का आभार व्यक्त किया।

''पैसे वाला होना सरल, अमीर बनना कठिन''

पंडित मिश्रा ने कहा कि धनवान होना आसान है, लेकिन सच्चा अमीर वही है जिसे अच्छी नींद आए, भोजन पच जाए और शरीर निरोगी रहे। सात दिनों तक कथा में शामिल रहे हजारों श्रद्धालु विराम के बाद पांडाल की रज माथे पर लगाकर अपने-अपने गंतव्य की ओर रवाना हुए।

भजनों पर झूमे श्रद्धालु

कथा के दौरान 'म्हारो चारभुजा रो नाथ' भजन पर लाखों श्रद्धालु झूम उठे और पूरा वातावरण भक्तिमय हो गया। आयोजन समिति ने जिला प्रशासन, पुलिस, नगर निगम, चिकित्सा एवं अन्य विभागों सहित सभी सहयोगियों का आभार व्यक्त किया।

रत्नत्रय महिला जागृति संघ ने मनाया प्रथम स्थापना दिवस, 'स्नेह स्पर्श' उत्सव में वृद्धजनों की सेवा

जयपुर. शाबाश इंडिया

सेवा और समर्पण के संकल्प के साथ महिला सशक्तिकरण की दिशा में कार्यरत रत्नत्रय महिला जागृति संघ ने अपनी स्थापना का एक वर्ष सफलतापूर्वक पूर्ण किया। इस विशेष अवसर को संस्था ने किसी भव्य आयोजन के बजाय 'नर सेवा ही नारायण सेवा' के ध्येय के साथ 'स्नेह स्पर्श-वृद्ध सेवा उत्सव' के रूप में मनाया। संस्था द्वारा यह आयोजन प्रताप नगर स्थित आशीर्वाद वृद्धाश्रम में किया गया, जहां निराश्रित एवं जरूरतमंद वृद्धजनों के बीच खुशियां बांटी गईं। संस्था की ओर से सभी वृद्धजनों को नई ड्रेस एवं विशेष रूप से पुरुषों के लिए कुर्ता-पायजामा प्रदान किए गए। इसके साथ ही रोजमर्रा की आवश्यकताओं के लिए तेल, साबुन, टूथपेस्ट एवं अन्य स्वच्छता सामग्री किट के रूप में वितरित की गई। स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए ताजे फल एवं हरी सब्जियों का भी वितरण किया गया। उत्सव के दौरान वृद्धजनों के लिए विशेष भोजन व्यवस्था की गई। इस अवसर पर उन्हें रुचिकर इडली-डोसा का स्नेह भोज कराया गया। साथ ही बीमार वृद्धजनों के लिए चिकित्सा सहायता एवं देखभाल की व्यवस्था भी सुनिश्चित की गई। संस्था की संस्थापक शालू बाकलीवाल (माधोराजपुरा), प्रियंका पाटनी, पूनम सेठी, सरिता जैन, सुमन जैन एवं रेखा जैन ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि छोटी-सी मदद और अपनापन वृद्धजनों के चेहरे पर मुस्कान ला सकता है। संस्था का उद्देश्य केवल संगठन चलाना नहीं, बल्कि समाज के अंतिम छोर पर बैठे व्यक्ति तक संवेदनशीलता पहुंचाना है। कार्यक्रम संयोजक श्वेता बाकलीवाल, तृप्ति जैन एवं पूर्विका जैन ने बताया कि स्थापना दिवस के अवसर पर वृद्धजनों की बुनियादी सुविधाओं का विशेष ध्यान रखा गया। इस अवसर पर खुशबू जैन, अलका पाटनी, योगिता जैन सहित संघ की अन्य सदस्याएं उपस्थित रहीं। सभी ने वृद्धजनों के साथ समय बिताकर उनका आशीर्वाद प्राप्त किया।

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया
shabaasindia@gmail.com | weeklyshabaas@gmail.com

भारत रत्न डॉ. भीमराव अंबेडकर जयंती शोभायात्रा पर पुष्प वर्षा से स्वागत

शाबाश इंडिया। संविधान निर्माता भारत रत्न डॉ. भीमराव अंबेडकर की 135वीं जयंती के अवसर पर मंगलवार को शहर में उत्साह और उमंग का माहौल रहा। इस अवसर पर निकाली गई भव्य शोभायात्रा का महावीर इंटरनेशनल परिवार द्वारा सेवा समिति गली के पास पुष्प वर्षा कर स्वागत किया गया। जैसे ही शोभायात्रा सेवा समिति गली के पास पहुंची, महावीर इंटरनेशनल के सदस्यों ने फूलों की वर्षा कर यात्रा में शामिल लोगों का अभिनंदन किया। इस दौरान पूरा वातावरण 'जय भीम' और 'बाबा साहेब अमर रहें' के नारों से गूंज उठा। इस अवसर पर डॉ. भीमराव समिति के पदाधिकारी जगदीश राय, हेमराज चावला, वीर दिनेश लाडना, वीर रतनलाल मेघवाल, वीर बंसीलाल कासोटिया एवं चेनसुख बुनकर सहित अन्य प्रमुखजन उपस्थित रहे। महावीर इंटरनेशनल की ओर से वीर रामावतार गोयल, वीर अशोक अजमेरा, वीर सुरेंद्र सिंह दीपपुरा, वीर संपत बगड़िया सहित अन्य सदस्यों ने अतिथियों का दुपट्टा पहनाकर सम्मान किया। इसके साथ ही लाइंस क्लब फोर्ट से मुरलीधर गोयल एवं विष्णु मोयल तथा गणमान्य नागरिकों में सुरेश बंसल, विनायक, अनिल कुमावत (अधिवक्ता), ओम प्रकाश कुमावत, मुकेश जांगिड़, राजू कुमावत सहित अनेक लोग उपस्थित रहे। सभी ने शोभायात्रा का पुष्प वर्षा कर स्वागत करते हुए शुभकामनाएं दीं।

डब्ल्यू पी एस एफ में रितु जैन को राष्ट्रीय सलाहकार पद पर नियुक्ति

जयपुर. शाबाश इंडिया। महिला एवं बाल विकास को समर्पित अंतरराष्ट्रीय संगठन डब्ल्यू पी एस एफ की राष्ट्रीय अध्यक्ष सुश्री राज कन्या जी के निर्देशानुसार, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष राजरानी जी एवं संयोजक संतोष कुमार जी की अनुशंसा तथा सचिव ऊमा सोनी जी की सहमति से सक्रिय कार्यकर्ता रितु जैन को राष्ट्रीय सलाहकार के महत्वपूर्ण पद पर नियुक्त किया गया है। रितु जैन, निवासी 61/176, रजत पथ, मानसरोवर, जयपुर, लंबे समय से सामाजिक एवं जनकल्याण कार्यों में सक्रिय रही हैं। उनकी कार्यनिष्ठा, समर्पण और समाजसेवा के प्रति लगन को देखते हुए संगठन ने उन्हें यह महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी है। संगठन के पदाधिकारियों ने विश्वास व्यक्त किया कि रितु जैन अपने पद की गरिमा को बनाए रखते हुए संगठन के उद्देश्यों, विशेष रूप से महिला एवं बाल विकास, को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी। इस अवसर पर रितु जैन ने संगठन का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि वे पूरी निष्ठा और ईमानदारी के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन करेंगी तथा समाज के उत्थान हेतु निरंतर कार्य करती रहेंगी।

शुभ से स्मार्ट तक: रिलायंस ज्वेल्स ने अक्षय तृतीया को किया नए सिरे से परिभाषित, एक नए भारत के लिए

आकर्षक मूल्य-आधारित ऑफर के साथ सोने और हीरे के गहनों को और सुलभ बनाया जा रहा है

मुंबई. शाबाश इंडिया

भारत के सबसे भरोसेमंद गहनों के ब्रांड्स में से एक, रिलायंस ज्वेल्स ने अक्षय तृतीया पर एक ताजा और मूल्य-आधारित दृष्टिकोण के साथ कदम रखा है। इस ब्रांड ने सोने और हीरे के नए कलेक्शन पेश किए हैं, जो त्योहारी खरीदारी को अधिक स्मार्ट और सुलभ बनाने के लिए तैयार किए गए हैं। ग्राहक सोने के गहनों पर मात्र 9% मेकिंग चार्ज और हीरे के गहनों के सोने के मूल्य पर 99% की छूट का लाभ उठा सकते हैं – यानी उन्हें केवल हीरों की कीमत चुकानी होगी। यह सचमुच एक बेमिसाल फेस्टिव ऑफर है। यह ऑफर 19 अप्रैल 2026 तक मान्य है। इस अक्षय तृतीया पर ग्राहक सोने और हीरे की बालियों, अंगूठियों, कंगनों और चेन सहित गहनों की विस्तृत श्रंखला में से अपनी पसंदीदा गहने चुन सकते हैं। इस कलेक्शन में स्टड्स, हूप्स और स्लीक फिंगर रिंग जैसे रोजमर्रा के पसंदीदा गहनों के साथ-साथ झुमकी, चाँदबाली, स्टेटमेंट नेकलेस और बारीक कारीगरी वाले कंगन जैसी फेस्टिव स्टाइल गहने भी शामिल है। डेली वेयर से लेकर ब्राइडल ज्वेलरी तक के विकल्पों के साथ, यह कलेक्शन गहनों को पसंद करने वालों को डिजाइनों की विविधता और बेहतरीन मूल्य, दोनों प्रदान करता है। सोने की कीमतों में जारी उतार-चढ़ाव और उपभोक्ताओं के व्यवहार में आते बदलाव के बीच, रिलायंस ज्वेल्स एक महत्वपूर्ण बदलाव की ओर ध्यान दिलाता है – आज गहने केवल एक परंपरागत खरीद नहीं, बल्कि एक स्मार्ट और पहनने योग्य निवेश भी है। उपभोक्ता अब ऐसी डिजाइनों की तलाश में हैं, जो भावनात्मक मूल्य और व्यावहारिक खर्च के बीच अच्छा संतुलन बनाएं। इस सोच को साकार करते हुए, इस ब्रांड के फेस्टिव कैंपेन में प्रसिद्ध अभिनेता गजराज राव और लापता लेडीज की प्रतिभा रांता के बीच एक भावपूर्ण पिता-पुत्री के पल को दशार्या गया है। यह विज्ञापन फि ल्म इस बात को उजागर करती है कि कैसे युवा उपभोक्ता परंपराओं को अधिक जागरूक और मूल्य-सचेत दृष्टिकोण से देख रहे हैं और साथ ही वे पारिवारिक मूल्यों से भी गहराई से जुड़े हुए हैं। जहाँ अक्षय तृतीया का अर्थ अभी भी 'शुभ' खरीदारी है, वहीं रिलायंस ज्वेल्स अपनी परिकल्पना को ''शुभ अक्षय तृतीया'' से 'स्मार्ट अक्षय तृतीया' की ओर ले जा रहा है। अक्षय तृतीया ऑफर के बारे में रिलायंस ज्वेल्स के प्रवक्ता ने कहा कि सोने की कीमतों में चल रहे उतार-चढ़ाव के बीच, उपभोक्ताओं का व्यवहार भी स्पष्ट रूप से बदल रहा है – आज के ग्राहक अधिक जागरूक, मूल्य-सचेत और विवेकशील हैं। रिलायंस ज्वेल्स में हमने इसी गहरी समझ के आधार पर अक्षय तृतीया के लिए मूल्य-आधारित कलेक्शन लॉन्च किया है और रिलायंस ज्वेल्स को न केवल इस परंपरा का अभिन्न हिस्सा माना है, बल्कि इसे एक स्मार्ट, पहनने योग्य निवेश के रूप में स्थापित किया है। यह आज के समय के अनुकूल है और 'शुभ' के साथ 'स्मार्ट' तरीके से उत्सव मनाने को एक साथ जोड़ता है। ग्राहक भारत भर में 140 से अधिक शोरूमों में, और ऑनलाइन माध्यम से रिलायंस ज्वेल्स के बारीक नक्काशीदार कलेक्शनों को देख सकते हैं और सोने तथा हीरे के गहनों पर आकर्षक ऑफर का लाभ उठा सकते हैं।

नेत्र चिकित्सा शिविर में 15 रोगियों का सफल ऑपरेशन, निशुल्क चश्मा वितरण

निवाई. शाबाश इंडिया। दिगंबर जैन महासमिति एवं अग्रवाल महिला परिषद् के तत्वावधान में 14 अप्रैल 2026 को राजकीय चिकित्सालय, निवाई में अंधता नियंत्रण समिति टोंक के सहयोग से निशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर आयोजित किया गया। शिविर में रोगियों की जांच कर 15 मरीजों का चयन ऑपरेशन हेतु किया गया और उनका निशुल्क लेंस प्रत्यारोपण सफलतापूर्वक किया गया। दिगंबर जैन महासमिति महिला इकाई युवा प्रकोष्ठ मंत्री संजू जौंला ने बताया कि लेंस प्रत्यारोपण कार्यक्रम का शुभारंभ भगवान महावीर के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। इस अवसर पर महासमिति संभाग अध्यक्ष हुकमचंद जैन, मंत्री विमल जौंला, शिक्षक सत्यनारायण गोयल, अधिवक्ता रवि भाणजा, महिला परिषद् अध्यक्ष उषा जैन एवं दिनेश सोगानी उपस्थित रहे। शिविर के दौरान महिला परिषद् एवं महासमिति के सदस्यों द्वारा रोगियों को चाय-बिस्किट एवं अल्पाहार भी उपलब्ध कराया गया। डॉ. ममता बिजरानियां द्वारा 15 रोगियों का सफल ऑपरेशन कर उन्हें आंखों की सुरक्षा हेतु निशुल्क चश्मे भी प्रदान किए गए। इस दौरान हुकमचंद जैन ने नेत्र रोगियों को धूप, धूल, मिट्टी, पानी और धुएं से आंखों की सुरक्षा रखने के निर्देश दिए। उन्होंने बताया कि ऑपरेशन के बाद आंखों को मसलना या किसी प्रकार का झटका देना नुकसानदायक हो सकता है। शिविर में टोंक, बड़ागांव, पीपलू, शिवाड़, बनस्थली, राहोली सहित आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों के मरीजों ने लाभ उठाया।

घटयात्रा के साथ 25 समवशरण महामंडल विधान का शुभारंभ, 28 समवशरण स्थापित

आगरा. शाबाश इंडिया। गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज, पट्टाचार्य विशुद्ध सागर जी महाराज एवं आचार्य श्री विहर्षसागर जी महाराज के मंगल आशीर्वाद से 25 समवशरण महामंडल विधान का आयोजन 14 से 19 अप्रैल तक किया जा रहा है। उपाध्याय श्री विहसंत सागर जी महाराज एवं मुनि श्री विश्वसाम्य सागर जी महाराज ससंघ के सानिध्य में यह आयोजन श्रद्धा और भक्ति का अनुपम संगम बना हुआ है। विधान का शुभारंभ 14 अप्रैल को प्रातः 7 बजे भव्य घटयात्रा के साथ हुआ। महिलाओं ने सिर पर मंगल कलश धारण कर भक्ति गीतों के साथ यात्रा में भाग लिया, वहीं पुरुष श्रद्धालुओं ने जयकारों के साथ पूरे वातावरण को धर्ममय बना दिया। यह शोभायात्रा जयपुर हाउस स्थित जैन मंदिर से प्रारंभ होकर विभिन्न मार्गों से होती हुई श्रीराम पार्क स्थित पंडाल तक पहुंची। घटयात्रा के दौरान रथों पर 28 श्रीजी की प्रतिमाएं विराजमान थीं, जिनके साथ उपाध्याय श्री विहसंत सागर जी महाराज ससंघ भी सम्मिलित रहे। पंडाल में पहुंचने पर ध्वजारोहण का सौभाग्य विमल कुमार आदित्य अरिहंत जैन परिवार को प्राप्त हुआ, जबकि पंडाल उद्घाटन महावीर जैन एवं मंच उद्घाटन तपेश जैन द्वारा किया गया। इसके उपरांत सकलीकरण, पात्र शुद्धि, मंडप शुद्धि, अभिषेक एवं शांतिधारा जैसे मांगलिक कार्यक्रम विधि-विधान पूर्वक संपन्न हुए। संपूर्ण विधान की क्रियाएं पंडित अरविंद जैन शास्त्री एवं पंडित संदीप जैन शास्त्री के निर्देशन में संगीतमय शैली में कराई जा रही हैं। शानू एंड पार्टी द्वारा प्रस्तुत भक्ति संगीत ने श्रद्धालुओं को भाव-विभोर कर दिया।

रामगंजमंडी में आदिनाथ मंदिर प्रतिष्ठा महोत्सव: ऐतिहासिक शोभायात्रा में उमड़ा जनसैलाब

अभिषेक जैन लुहाड़िया

रामगंजमंडी. शाबाश इंडिया। शहर के बाजार नंबर 3 में सफेद संगमरमर से निर्मित भव्य आदिनाथ जैन मंदिर का प्रतिष्ठा महोत्सव पूरे वैभव और अनुशासन के साथ मनाया जा रहा है। मंगलवार सुबह मंदिर से शुरू हुई भव्य शोभायात्रा ऐतिहासिक रही, जिसमें हजारों की संख्या में श्रद्धालु शामिल हुए।

शोभायात्रा के मुख्य आकर्षण

शोभायात्रा में सबसे आगे स्थानीय बैंड, उसके बाद उज्जैन का भस्म रमैया मंडल और पंजाब का शेरे पंजाब बैंड अपने हैरतअंगेज करतब दिखाते हुए चल रहे थे। खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री मणीप्रभ सुरीश्वर जी महाराज और जगतगुरु शंकराचार्य स्वामी ज्ञानानंद जी पूरी यात्रा के दौरान पैदल चले, जो जनता के लिए विशेष आकर्षण और श्रद्धा का केंद्र रहा। शहर के विभिन्न प्रमुख मार्गों से होती हुई यह यात्रा राजकमल ऑयल मील पहुंची।

संतों का पावन संबोधन

प्रवचन सभा में भानपुरा पीठ के जगतगुरु शंकराचार्य ने कहा कि अच्छे कार्यों में बाधाएं आती हैं, लेकिन परोपकार का मार्ग नहीं रुकना चाहिए। वहीं, आचार्य श्री मणीप्रभ सुरीश्वर जी ने कहा कि रामगंजमंडी में इतिहास रचा जा रहा है, क्योंकि यह भव्य शिखरबद्ध मंदिर मात्र 7 महीने और 7 दिन में बनकर तैयार हुआ है। उन्होंने कहा कि यह मंदिर पूरे नगर का है और परमात्मा का संदेश 'एक-दूसरे के लिए जीना' है। श्रीसंघ के अध्यक्ष राजकुमार पारख और कोषाध्यक्ष सुशील गोखरू ने बताया कि बुधवार सुबह 8.33 बजे भगवान आदिनाथ की प्रतिमा गद्दीनशीन होगी और शिखर पर ध्वजा फहराई जाएगी। प्रतिष्ठा कार्यों के लिए विभिन्न परिवारों ने लाभ लिया है, जिनमें लोढ़ा परिवार (ध्वजा), कोठारी परिवार (आदिनाथ भगवान प्रतिष्ठा) और बापना परिवार प्रमुख हैं। अल्प समय में मंदिर निर्माण के लिए अध्यक्ष राजकुमार पारख का विभिन्न संघों द्वारा बहुमान भी किया गया। आचार्य श्री ने शोभायात्रा में दिखी सर्वधर्म एकता की सराहना करते हुए कहा कि संत और धर्म किसी एक वर्ग के नहीं, बल्कि पूरी मानवता के कल्याण के लिए होते हैं।

त्याग के प्रतीक महावीर और संग्रह के जाल में फंसता साधु समाज-अब मौन नहीं, निर्णायक चेतावनी आवश्यक

जिन प्रभु भगवान महावीर ने राजपाट, ऐश्वर्य, परिवार, शरीर की सुख-सुविधाएँ—यहाँ तक कि वस्त्र तक का त्याग कर दिया, जिनका सम्पूर्ण जीवन अपरिग्रह का सजीव उदाहरण है, आज उसी महावीर के नाम पर खड़ा कुछ साधु समाज जिस दिशा में जा रहा है, वह केवल चिंता का विषय नहीं, बल्कि धर्म के मूल अस्तित्व पर प्रश्नचिह्न है। महावीर ने स्पष्ट कहा था कि संग्रह ही बंधन है, और त्याग ही मुक्ति का मार्ग है। लेकिन आज विडम्बना यह है कि उसी त्याग की परंपरा के नाम पर संग्रह के नए-नए रूप खड़े कर दिए गए हैं और सबसे खतरनाक बात यह है कि यह सब धर्म के आवरण में हो रहा है, जिससे सामान्य श्रद्धालु इसे पहचान ही नहीं पा रहा। आज संग्रह केवल धन या वस्तुओं का नहीं रहा, बल्कि यह एक सुव्यवस्थित 'सिस्टम' बन चुका है। सीधे हाथ से कुछ न लेना, लेकिन अपने प्रभाव से सब कुछ नियंत्रित करना—यह नई प्रवृत्ति है। चातुर्मास के नाम पर पहले से तय होना कि कहाँ ठहरना है, कैसी व्यवस्था चाहिए, कितनी भीड़ जुटेगी, कितना प्रचार होगा—यह सब त्याग नहीं, बल्कि एक प्रकार की 'प्लानिंग' है। प्रतिष्ठा महोत्सवों में कौन-सा मंच होगा, कौन-सा भंडारा किसके द्वारा कराया जाएगा, किस ठेकेदार को काम मिलेगा, किस कलाकार को बुलाया जाएगा—इन सभी निर्णयों में यदि साधु का प्रत्यक्ष या परोक्ष हस्तक्षेप है, तो यह स्पष्ट संकेत है कि संग्रह अब केवल भौतिक नहीं, बल्कि प्रभाव और नियंत्रण का भी हो चुका है। आज कुछ स्थानों पर यह भी देखने में आता है कि साधु अपने अनुयायियों की संख्या को बढ़ाने में लगे हैं, मानो यह कोई आध्यात्मिक यात्रा नहीं, बल्कि एक प्रतिस्पर्धा हो। सोशल मीडिया पर प्रचार, बड़े-बड़े बैनर, स्वागत में दिखावा, और अपने प्रभाव को स्थापित करने की होड़—क्या यह सब उस महावीर के मार्ग का हिस्सा है, जिन्होंने अकेलेपन, मौन और आत्मचिंतन को अपनाया था? जब साधु ही अपने 'ब्रांड' को बढ़ाने में लग जाए, तो फिर वह साधु नहीं, एक प्रबंधक बन जाता है। संग्रह के तरीके इतने सूक्ष्म हो गए हैं कि आम व्यक्ति उसे समझ नहीं पाता। उदाहरण के लिए—सीधे धन स्वीकार नहीं करना, लेकिन अपने अनुयायियों के माध्यम से सारी व्यवस्थाएँ करवाना; स्वयं कुछ न कहना, लेकिन संकेतों से यह तय कर देना कि क्या होना चाहिए; साधु के नाम पर ट्रस्ट, संस्थाएँ और समितियाँ बनाकर उनके माध्यम से आर्थिक और सामाजिक नियंत्रण स्थापित करना—यह सब एक ऐसा जाल है जिसमें धर्म का नाम है, लेकिन आत्मा का कल्याण कहीं पीछे छूट गया है। और सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि समाज यह सब देखकर भी मौन क्यों है? क्या यह मौन श्रद्धा है या डर? क्या हम इसलिए कुछ नहीं कहते क्योंकि हमें 'धर्म विरोधी' कह दिया जाएगा? यदि कोई व्यक्ति महावीर के नाम पर महावीर के सिद्धांतों के विपरीत आचरण करे, और हम चुप रहें, तो यह चुप्पी भी पाप में भागीदार बन जाती है। सच्ची श्रद्धा अंधी नहीं होती, वह विवेकपूर्ण होती है। यह भी सत्य है कि सभी साधु ऐसे नहीं हैं। आज भी अनेक सच्चे त्यागी, तपस्वी और आत्मलीन संत इस परंपरा की गरिमा को बचाए हुए हैं। वे न प्रचार चाहते हैं, न सुविधा, न संग्रह—वे केवल साधना में लीन हैं। लेकिन कुछ लोगों के कारण पूरी साधु परंपरा की छवि धूमिल हो रही है। और यदि समय रहते इस पर नियंत्रण नहीं किया गया, तो आने वाली पीढ़ियाँ साधु और प्रबंधक में अंतर ही भूल जाएँगी। अब समय आ गया है कि समाज स्पष्ट रूप से निर्णय ले। साधु का सम्मान केवल उसके वस्त्र या उपाधि से नहीं, बल्कि उसके आचरण से होना चाहिए। जो महावीर के मार्ग पर चलेगा, वही पूजनीय होगा—और जो संग्रह, प्रभाव और नियंत्रण की राजनीति करेगा, उसे प्रश्नों के कटघरे में खड़ा किया जाएगा। यह विरोध नहीं, बल्कि धर्म की रक्षा है। हमें यह स्वीकार करना होगा कि जहाँ संग्रह है, वहाँ साधुत्व नहीं हो सकता। जहाँ प्रभाव की लालसा है, वहाँ त्याग नहीं हो सकता। और जहाँ त्याग नहीं, वहाँ महावीर का मार्ग नहीं हो सकता। इसलिए अब समय है कि हम केवल जय-जयकार करने वाले अनुयायी न बनें, बल्कि जागरूक और जिम्मेदार श्रावक बनें, जो सत्य को पहचान सके और उसे स्वीकार करने का साहस भी रखे। यदि आज भी हम नहीं जागे, तो कल बहुत देर हो जाएगी। महावीर का नाम रहेगा, लेकिन उनका मार्ग खो जाएगा। और यह हानि किसी एक व्यक्ति की नहीं, पूरे जैन समाज की होगी। इसलिए अब मौन नहीं, बल्कि स्पष्ट और निर्णायक चेतावनी आवश्यक है—धर्म के नाम पर चल रहे इस संग्रह के खेल को पहचानो, और महावीर के सच्चे मार्ग की ओर लौटो, यही समय की पुकार है।

नितिन जैन
संयोजक – जैन तीर्थ श्री पार्श्व पद्मावती धाम, पलवल (हरियाणा)
जिलाध्यक्ष – अखिल भारतीय अग्रवाल संगठन, पलवल, मोबाइल: 9215635871

संस्कारों का बीजारोपण बचपन में ही होना आवश्यक: आचार्य प्रज्ञासागर

जयपुर. शाबाश इंडिया। जवाहर नगर स्थित जैन मंदिर में मंगलवार को आयोजित धर्मसभा में आचार्य श्री प्रज्ञासागर महाराज ने प्रवचन देते हुए कहा कि धर्म की प्रभावना बढ़ाने के लिए युवा पीढ़ी को धर्म से जोड़ना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि संस्कारों का बीजारोपण बचपन में ही होना चाहिए, तभी समाज में नैतिकता और आचार-विचार की मजबूती बनी रह सकती है। आचार्य श्री ने कहा कि प्रत्येक जैन मंदिर में जैन पाठशाला की स्थापना की जानी चाहिए, जिससे बच्चों में अच्छे संस्कारों का विकास हो सके और धर्म की प्रभावना और अधिक सुदृढ़ हो। अध्यक्ष महेंद्र बक्शी एवं सचिव अजय गोधा ने जानकारी देते हुए बताया कि धर्म प्रभावना को बढ़ाने के उद्देश्य से महाराज श्री के प्रतिदिन प्रवचन आयोजित किए जा रहे हैं, जिनमें बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित होकर लाभ प्राप्त कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि धर्मसभा से पूर्व राजस्थान जैन सभा के पदाधिकारियों द्वारा महाराज श्री को श्रीफल अर्पित कर सम्मानित किया गया। साथ ही आगामी 18 एवं 19 अप्रैल को होने वाले भव्य आयोजन की तैयारियों को लेकर समाज के विभिन्न संगठनों के पदाधिकारियों की बैठक भी आयोजित की गई।

श्री सांई सेवा समिति बरवाला ने ''एक शाम सांई के नाम'' 13वीं भजन संध्या का किया आयोजन

हरियाणा/हिसार (राजेश सलूजा)। श्री सनातन धर्म हनुमान मंदिर द्वारा संचालित श्री सांई सेवा समिति बरवाला के तत्वावधान में मेन बाजार चौक स्थित राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय परिसर में 'एक शाम सांई के नाम' 13वीं भजन संध्या का भव्य आयोजन किया गया। प्रोजेक्ट चेयरमैन संजीव भाटिया एवं प्रोजेक्ट चेयरमैन तरुण कक्कड़ ने बताया कि इस भजन संध्या में अति विशिष्ट अतिथि के रूप में पूर्व विधायक वेद नारंग, नगर निगम हिसार के महापौर प्रवीण पोपली तथा अधिवक्ता मानुज सरदाना ने शिरकत की। कार्यक्रम का शुभारंभ श्री सांई भक्त डॉ. अनिल मुजांल द्वारा ज्योत प्रज्वलन से हुआ। गणेश पूजन युवा नेता संजय संदूजा ने किया, जबकि श्री सांई पालकी सेवा युवा नेता राहुल चोपड़ा ने संपन्न कराई। श्री सांई आरती समाजसेवी प्रदीप कथूरिया द्वारा की गई तथा श्री सांई माला अर्पण संरक्षक मदनलाल चावला ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता संरक्षक भीमसेन मक्कड़ ने की तथा मंच संचालन पूर्व पार्षद प्रतिनिधि विक्की रहेजा ने प्रभावी ढंग से किया। इस भजन संध्या में दिल्ली से आए भजन कलाकार शिल्पी मदान एवं प्रवीण मलिक ने अपने मधुर कंठ से श्री सांई बाबा के भजनों की प्रस्तुति दी। भजनों पर उपस्थित श्रद्धालु एवं अतिथि भावविभोर होकर झूम उठे। कार्यक्रम के दौरान बबलू महादेव ग्रुप द्वारा सांई बाबा की आकर्षक झांकियां प्रस्तुत की गईं तथा बाबा का अटूट लंगर भी चलाया गया। इस अवसर पर संरक्षक भीमसेन मक्कड़, मदनलाल चावला, मास्टर मनोहरलाल रहेजा, सेवानिवृत्त प्रिंसिपल ओमप्रकाश वधवा, संजीव भाटिया, तरुण कक्कड़, हनी चुघ, अधिवक्ता संजय मक्कड़, कविता रहेजा, पुनीत जावा, तुषार वधवा, सुनीता भाटिया, पूनम कक्कड़, सागर ढीगड़ा, बृजमोहन चोपड़ा, गुलशन भूटानी, महेंद्र सेतिया, मनोज चुघ, केवल कृष्ण आर्य, अजय काठपाल, दिनेश कथूरिया एवं गौरव कक्कड़ सहित सैकड़ों श्रद्धालु उपस्थित रहे।

कार्यशाला में 100 छात्रों को 120 घंटे का पांडुलिपि सर्वे प्रशिक्षण

जयपुर. शाबाश इंडिया। विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान, जयपुर एवं पंडित मोतीलाल जोशी प्राच्य विद्या अनुसंधान केंद्र, शाहपुरा बाग के संयुक्त तत्वावधान में 21 दिवसीय (120 घंटे) पांडुलिपि प्रशिक्षण कार्यशाला राजस्थान शिक्षक प्रशिक्षण विद्यापीठ में प्रारंभ हुई। इस कार्यशाला में 100 छात्रों को मेगा पांडुलिपि सर्वे के लिए प्रशिक्षित किया जा रहा है। प्रशिक्षण के दौरान मिशन से जुड़े डॉ. मनीषा शर्मा एवं जयप्रकाश शर्मा द्वारा प्रतिभागियों को पांडुलिपियों के सर्वे, पहचान और दस्तावेजीकरण की विस्तृत जानकारी दी गई। प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद छात्र राजस्थान के सुदूर एवं ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर प्राचीन पांडुलिपियों का सर्वे कार्य करेंगे। यह कार्यशाला 3 मई तक चलेगी। इस पहल का मुख्य उद्देश्य प्रदेश के दूरस्थ क्षेत्रों में संरक्षित दुर्लभ पांडुलिपियों को खोजकर उनका संरक्षण एवं सूचीबद्ध करना है, जिससे भारतीय ज्ञान परंपरा को सशक्त आधार मिल सके।

सी आर डी ए वी गर्ल्स कॉलेज में बैसाखी, डॉ. भीमराव अंबेडकर जयंती एवं जलियांवाला बाग स्मृति दिवस मनाया गया

ऐलनाबाद. रमेश भार्गव। 13 अप्रैल को सी आर डी ए वी गर्ल्स कॉलेज में प्राचार्य डॉ. भूषण मोंगा के निर्देशन में बैसाखी का पर्व हर्षोल्लास और उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर कॉलेज की छात्राओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया और पारंपरिक गिद्धा प्रस्तुत कर वातावरण को उत्सवमय बना दिया। कार्यक्रम में कॉलेज की प्रबंधन सदस्य डोली मेहता विशेष रूप से उपस्थित रहीं। उन्होंने विद्यार्थियों को बैसाखी के महत्व पर प्रेरणादायक शब्दों में संबोधित करते हुए कहा कि यह पर्व खुशियों, एकता और नई शुरूआत का प्रतीक है। उन्होंने विद्यार्थियों को अपनी संस्कृति से जुड़े रहने और प्रत्येक पर्व को पूरे उत्साह से मनाने के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती भी मनाई गई। छात्राओं ने विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से उनके जीवन एवं विचारों को प्रस्तुत किया। प्राचार्य एवं डोली मेहता ने डॉ. अंबेडकर के संघर्षपूर्ण जीवन, शिक्षा के प्रति उनके समर्पण तथा समाज में समानता स्थापित करने में उनके योगदान पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के दौरान जलियांवाला बाग हत्याकांड की स्मृति में भी विद्यार्थियों को जागरूक किया गया। प्राचार्य डॉ. भूषण मोंगा ने बताया कि 13 अप्रैल 1919 भारतीय इतिहास का एक काला दिन है, जब निहत्थे लोगों पर अमानवीय अत्याचार किया गया। उन्होंने विद्यार्थियों को स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान को याद रखने और उनसे प्रेरणा लेने का संदेश दिया। इस अवसर पर कॉलेज के स्टाफ सदस्य दीपशिखा सरदाना, इंदु कामरा, कवलजीत कौर, प्रभजोत कौर सहित अन्य सदस्य उपस्थित रहे। सभी ने कार्यक्रम को सफल बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

निशुल्क मिर्गी रोग शिविर में 112 रोगी लाभान्वित

गुलाबपुरा (रोहित जैन)

श्री प्राज्ञ मिर्गी रोग निवारक समिति, गुलाबपुरा द्वारा माह के द्वितीय मंगलवार, दिनांक 14 अप्रैल 2026 को संस्था परिसर में निशुल्क मिर्गी रोग शिविर का आयोजन किया गया। संस्था के मंत्री पदमचंद खटोड़ ने बताया कि शिविर में वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. आर. के. चंडक ने अपनी सेवाएं प्रदान करते हुए 112 मरीजों का उपचार किया, जिनमें 15 नए मरीज शामिल थे। सभी रोगियों को निशुल्क दवाइयां भी वितरित की गईं। संस्था मंत्री पदमचंद जैन ने संस्था की गतिविधियों की जानकारी दी, जबकि पूर्व कार्याध्यक्ष मूलचंद नाबेड़ा ने अतिथियों का स्वागत किया और कोषाध्यक्ष राजेंद्र चौरड़िया ने आभार व्यक्त किया। शिविर में अनिल चौधरी ने मरीजों को मिर्गी रोग से बचाव एवं योग के महत्व के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए नियमित अभ्यास पर जोर दिया। इस अवसर पर लक्ष्मीनारायण टांक, प्रियांशी टांक एवं महिला मंडल अजमेर से सुशीला पोखरणा और गुणमाला नाहर ने मरीजों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामनाएं कीं। अनिता रांका ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। लाभार्थी परिवार की ओर से यशवंत टांक, बबीता टांक सहित महिला मंडल अजमेर की पुष्पा पोखरणा, तारा सिसोदिया, सुशीला भंसाली, शशि नौलखा, मधु खटोड़, सुशीला खराड़ा, चंचल खटोड़, आशा चौधरी, हेमलता पोखरणा, ममता सोनी, चंदा पोखरणा, मधु बोहरा, राखी बाबेल, निर्मला चिपड़, सरला तातेड़, मंजू भंसाली एवं प्रिया चौरड़िया ने सेवाएं प्रदान कीं। शिविर के लाभार्थी महिला मंडल अजमेर एवं स्वर्गीय श्रीमती आजाद टांक की पुण्य स्मृति में लक्ष्मीनारायण टांक एवं उनके परिवार रहे। शिविर में आए मरीजों एवं उनके परिजनों के लिए पूरे अप्रैल माह के सभी शिविरों में निशुल्क भोजन व्यवस्था बादाम बाई की पुण्य स्मृति में शांतिलाल जी एवं विनीत कुमार डांगी (गुलाबपुरा) द्वारा की गई, जिसका लाभ 240 से अधिक लोगों ने उठाया। इस अवसर पर संस्था के मदनलाल लोढ़ा, मूलचंद नाबेड़ा, राजेंद्र चौरड़िया, मदनलाल रांका, पारस बाबेल, बंशीलाल डोसी, सुरेश लोढ़ा, अनिल चौधरी, सुशील चौधरी, दिनेश जोशी, प्रेम पाड़लेचा, कमल कावड़िया, दिलीप पाराशर, अनिता रांका, विनीता चौधरी, पूजा कोठारी, शशि चपलोत सहित अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने सेवाएं प्रदान कीं।

राजस्थान पुलिस स्थापना दिवस 2026: मंगलवार से शुरू हुआ उत्सव

जयपुर में ग्रैंड बैंड शो से शुरू हुआ पुलिस स्थापना दिवस समारोह, 16 अप्रैल को होगा भव्य समापन

जयपुर. शाबाश इंडिया

राजस्थान पुलिस स्थापना दिवस 2026 के उपलक्ष्य में राज्यभर में उत्सव का माहौल शुरू हो चुका है। हालांकि स्थापना दिवस का मुख्य समारोह 16 अप्रैल को आयोजित किया जाएगा, लेकिन इसकी औपचारिक शुरूआत 14 अप्रैल से हो गई। इसी क्रम में मंगलवार शाम जयपुर के अल्बर्ट हॉल परिसर में भव्य ''ग्रैंड बैंड शो'' का आयोजन किया गया, जिसने दर्शकों को रोमांचित कर दिया। ग्रैंड बैंड शो में राजस्थान पुलिस के बैंड दलों ने देशभक्ति और पारंपरिक धुनों की शानदार प्रस्तुतियां दीं। रंग-बिरंगी रोशनी और अनुशासित मार्च के साथ बैंड की प्रस्तुति ने कार्यक्रम को आकर्षक बना दिया। बड़ी संख्या में आमजन, अधिकारी और पुलिसकर्मी इस आयोजन के साक्षी बने। कार्यक्रम का उद्देश्य पुलिस और जनता के बीच संबंधों को और मजबूत बनाना तथा पुलिस बल की कार्यशैली और परंपराओं को प्रदर्शित करना रहा। राजस्थान पुलिस का स्थापना

दिवस हर वर्ष 16 अप्रैल को मनाया जाता है। वर्ष 1949 में राज्य के गठन के बाद पुलिस व्यवस्था को एकीकृत कर आधुनिक स्वरूप दिया गया था। तब से लेकर आज तक राजस्थान पुलिस ने कानून-व्यवस्था बनाए रखने, अपराध नियंत्रण, महिला सुरक्षा और आपदा प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस वर्ष स्थापना दिवस के अवसर पर राज्यभर में 14 से 16 अप्रैल तक विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इनमें परेड, शस्त्र प्रदर्शन, रक्तदान शिविर, जनजागरूकता अभियान और उत्कृष्ट सेवाएं देने वाले पुलिसकर्मियों का सम्मान शामिल है। 16 अप्रैल को होने वाले मुख्य समारोह में वरिष्ठ अधिकारी और जनप्रतिनिधि भाग लेंगे, जहां पुलिसकर्मियों को उनके उत्कृष्ट कार्य के लिए सम्मानित किया जाएगा। भीलवाड़ा, जोधपुर, कोटा, उदयपुर सहित सभी जिलों में पुलिस लाइन और अन्य स्थानों पर विशेष आयोजन किए जा रहे हैं। इन कार्यक्रमों के माध्यम से पुलिस और आमजन के बीच संवाद को बढ़ावा देने का प्रयास किया जा रहा है। सामुदायिक पुलिसिंग को मजबूत करने के लिए भी विशेष पहल की जा रही है।